खण्ड काव्यक विकास

महाकाव्यक सदृश खण्डकाव्य प्रबन्धकाव्यक एक भेद अछि। एहिमे जीवनक सर्वांगीण चित्रण नहि भए ओकर एकटा अंश मात्र रहैत छैक। अतः ओहन खंड जीवन जे महाकाव्यक शैली मे वर्णित रहैत अछि, खण्डकाव्य कहबैत अछि।

मैथिली खण्डकाव्यक निर्माण बीसम शताब्दीक पहिल दशकसँ प्रारम्भ भेल। प्रारम्भिक कालमे तत्कालीन सामाजिक परिवेश, पौराणिक उपाख्यान आ धार्मिक ओ सांस्कृतिक मान्यताक आधार पर खण्डकाव्यक रचना भेल। 1909 ई.सँ 1935क मध्य जे प्रमुख खण्ड काव्यक रचना भेलताहि मे महाकविलालदासक गणेश खंड, हरितालिकत कथा चण्डीचरित, गंगा महात्म्य आदि, जनार्दन झाक जानकी परिणय, गुणवन्तलालक [illegible] सुदर्शनोपाख्यान मा गंगाधर मिश्रक नारद मोह, अनुप मिश्रक नारद विवाह, दामोदर लाल दासक सती-स्त्री-सत्यावनोपाख्यान आदि प्रमुख रूप सँ उल्लेखनीय अछि। भाषा साहित्यक सेवाभाव ओ लोकानुरंजक तथा मनोरंजन प्रदान करब एहि रचना समक मूल उद्देश्य छल। एहि रचना समस मे शिल्प छायावादी तथा आदि अनुबन्ध नहि छल।

1936 सँ 46क मध्य रचित खण्डकाव्यक दर्शनत पौराणिके रहल मुदा ओहिमे राजनीतिक ओ सामाजिक जागरणक प्रभावक संग कला पक्षक सबलता सेहो होमय लागल। एहि समयक देवकृष्ण रायक 'भार्गव विजय', छेदी झा 'द्विजवर'क 'कोइली दूत', अच्युतानन्दक 'पार्वती महिमा', मुंशी रघुनंदन दासक 'वीरबालक' आदि प्रमुख खंडकाव्य रचनामे अबैत अछि।

1947 ई० सँ जे खण्डकाव्यक रचना भेल ओहिमे वैज्ञानिक युगक प्रभाव सँ लौकिक जीवनक दर्शन कराओल गेल। पूर्ववर्त्ती खण्डकाव्य सदृश ईहो खण्डकाव्य सभ पौराणिक ओ ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित छल मुदा एहिमे एकर प्रयोग मात्र युगीन-प्रवृत्तिक अभिव्यक्ति लेल कएल गेल। कल्पित कथानकक आधार पर लोकजीवनाश्रित सुख-दुःख ओ नीक अधलाहक चित्रण कएल गेल।

पौराणिक, ऐतिहासिक तथा कल्पित कथानकक आधार पर रचल गेल एहि खण्डकाव्य सभक रचना चारि रूपमे कएल गेल –

(1) चरित्रात्मक (2) प्रतीकात्मक (3) इतिवृत्तात्मक (4) भावात्मक

(1) चरित्रात्मक → एकर अन्तर्गत तीन प्रकारक रचना होइत अछि –

(i) काल्पनिक (ii) ऐतिहासिक (iii) पौराणिक

(i) काल्पनिक → 'कृषक' (1947) आ 'संन्यासी' (1948) दुइ गोट काल्पनिक खण्डकाव्यक श्रेणीमे अबैत अछि।

मथुरानन्दन चौधरीक 'कृषक' छन्द बद्ध आ चारि सर्गमे रचित अछि। एहिमे जमीन्दारी प्रथामे कृषक एकसँ खखाइह होइत छल आ ओकर बदलीमे जे अमानुषिक अत्याचार होइत छल तकर सजीव वर्णन कएल गेल अछि।

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'संन्यासी' सर्ग रहित आ अमित्राक्षर छन्दमे भावुकतापूर्ण वर्णन सामाजिक रूढ़िवादिता आ धर्मांधताक उघेल

Scanned with CamScanner

करबाक कारणे मैथिली खण्डकाव्यमे प्रसिद्ध अछि।

(ii) ऐतिहासिक → ऐतिहासिक खण्डकाव्यक अन्तर्गत डॉ० केदारनाथ लाभक 'लछिमारानी' (1960ई) आ 'भारती' (1964ई०) कें मानल जाइत अछि। डॉ० लाभ अपन प्रखर ओ प्रौढ़ कवित्व सँ इतिहास प्रसिद्ध कथा ओ जनश्रुतिक आधार पर एहि दुन्नू खण्डकाव्यक अंकन कयलनि। एहिमे एक दिशि जे विद्यापतिक आदरणीय लछिमारानीक चर्चा अछि त' दोसर दिशि शंकराचार्यक सम्मानीया भारतीक।

(iii) पौराणिक → 'उत्तरा' 'पतन' 'शरशय्या' तथा 'एकलव्य' खण्डकाव्यक रचना 'पौराणिक' उपाख्यानक आधार पर भेल।

महाकवि सुमनक 'उत्तरा' (1980) मैथिली साहित्यक अनुपम कृति थिक। एकर कथानक महाभारतक मूल कथाक मनोवैज्ञानिक परिष्कार कए कएल गेल अछि। छओ सर्गमे निबद्ध, विविध छन्द मे रचित, रस-ध्वनि आ अलंकारक समावेश सँ परिपूर्ण 'उत्तरा' अत्यन्त प्रसादगुण सम्पन्न अछि।

तीन सर्ग ओ तीन छन्द मे आबद्ध 'पतन' (1969) महाभारत ओ देवीभागवतक आधार पर उपेन्द्र 'व्यास' द्वारा रचल गेल। 'पतन' वर्तमान राजनीति परिप्रेक्ष्यमे सार्थक रचना सिद्ध भेल अछि।

महाभारतक भीष्मपर्व ओ आदि-पर्वक आधार पर बुद्धिधारी सिंह 'शरशय्या' (1969) क रचना कयलनि। भावुकता प्रधान ओ

पाण्डित्यक आधिक्य रहितो तीन सर्गो ओ छन्दमे रचित एहि खण्डकाव्य द्वारा दर्शनिशास्त्रक दर्शन कराओल गेल।

डॉ० अमरेन्द्र मिश्र निषाद शिष्य एकलव्यक (1970) चारित्र चित्रण अपन ओजपूर्ण भावमे कयलनि। एहिमे वर्तमान राजकीय शिक्षाक दुरावस्था प्रसंगमे जाति आ वर्गगत वैचारिक संकीर्णतासँ चिन्तित कवि गुरु द्रोण ओ एकलव्यक गुरु-शिष्यक आदर्शचरित्रक द्वारा सत्प्रेरणा देबाक सफल प्रयास कयलनि।

(2) प्रतीकात्मक →

गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'सीता' (1967) तथा 'पंचकन्या' (1971 ई) प्रतीकात्मक खण्डकाव्यक रूपमे आयल अछि। 'सीता' मे मिथिलांचलक रीति-रिवाज ओ मैथिल ललनाक यथार्थ चित्रणक संग सीताक प्रादुर्भावसँ अयोध्या प्रस्थान धरिक सम्पूर्ण कथाक वर्णन भेल अछि। एहिमे शब्दक सुकुमारता, भावक मधुरता, वर्णनक चमत्कार आ अलंकारक समावेश अद्भुत अछि।

'पंचकन्या' मे अहल्या, तारा, मंदोदरी, कुन्ती एवं द्रौपदीक आदर्श चरित्रके आधार मानि भारतीय नारीक शील ओ त्यागक विराट परम्पराक मौलिक अभिव्यंजना कएल गेल अछि। नूतन शिल्प प्रयोग, शैलीक चमत्कार आ भाव प्रवण चित्रणक संग ई खण्डकाव्य अति रमणीय सिद्ध भेल।

Scanned with CamScanner

③ इतिवृत्तात्मक →

कविवर सीताराम झाक 'भूकम्प वर्णन' आ योगेश्वर झाक 'नोर' (1979) प्राकृतिक विपदा पर आधारित लोकप्रसिद्ध वृत्तात्मक खण्ड काव्य अछि। 'भूकम्प वर्णन' मे 1934क भूकम्पक स्वरूप ओ ओहि धनजनक सहयोग आदि घटनाक वर्णन भेल अछि। एकर अतिरिक्त भूकम्पक कारण समय, लक्षण आ पूर्वाभासक सेहो देल गेल अछि।

कोशी नदीक भयंकर बाढ़ि आ ओहि सँ होमयवला विध्वंसलीला जाहि सँ समस्त भूभागक नारकीय जीवनक वर्णन नोर मे भेल अछि। मुक्त छन्द आ सात प्रवाहमे रचित नोरक भाषा अपन सहजता ओ प्रवाहक कारणे बड़ लोकप्रिय भेल।

4) भावात्मक →

रामानन्द रेणुक 'ओकरे नाम' तथा गंगेश गुंजनक 'हम एकटा मिथ्या परिचय' भावात्मक खण्डकाव्य अछि। शैलीमे नवीनता, स्वाभाविकता आ काव्यकौशलक दृष्टिसँ उत्तम कोटिक खण्ड काव्य कहल जाइत अछि।

मौलिक रचनाक अतिरिक्त संस्कृत खण्डकाव्यक मैथिली रूपान्तरण सेहो भेल। परमानन्द दत्त, श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', छेदी झा जयकान्त झाक द्वारा कालिदासक प्रसिद्ध रचना 'मेघदूतक' रूपान्तरण कएल गेल।

'ऋतुसंहारके अनुवादक अच्युतानन्द दत्त, श्री वल्लभ झा तथा आचार्य सुमन द्वारा 'ऋतुसंगार' नामसँ कएल गेल।

(06)

खण्डकाव्यक विकास यात्राक एहि सँ विश्लेषण कएला उत्तर स्पष्ट होइत अछि जे समय आ परिवेशक बदलैत आचार विचारक संग नव-नव भावधारामे खण्डकाव्यक रचना निरंतर होइत रहल। यद्यपि महाकाव्यक अपेक्षा खण्डकाव्यक सृष्टि कम भेल अछि तथापि विषय वैविध्य, वर्णन-वैभव एवं काव्यात्मकताक कारणेँ एकर भविष्य उज्ज्वल दृष्टिगोचर होइत अछि।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महा०,
राजनगर, मधुबनी
मो० - 8825149938